सेमेस्टर-6 Core-14

पत्रकारिता के प्रकार

डॉ० सफ़ी अल्लाह अंसारी ①

पत्रकारिता या आधुनिक पत्रकारिता का क्षेत्र बहुत व्यापक है, बहु आयामी है। इसमें समाज की और जनजीवन की विविध छवियों और रंगों-रेखाओं को साफ-साफ देखा जा सकता है। वर्तमान परिदृश्य में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक इत्यादि सभी क्षेत्रों में एक सुविकसित पत्रकारिता के दर्शन होते हैं। अतः पत्रकारिता के विविध स्वरूप और क्षेत्र को देखते हुए हम उसके अलग-अलग प्रकारों का अध्ययन इस तरह करेंगे :—

(क) समाचार माध्यमों के आधार पर पत्रकारिता के प्रकार :

1. **मुद्रित माध्यम** — इसे अंग्रेजी में 'प्रिंट मीडिया' कहते हैं। इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के दैनिक समाचारपत्र, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक और अनियतकालीन पत्रपत्रिकाएँ आती हैं।

2. **श्रव्य माध्यम** — इसे अंग्रेज़ी में 'इलेक्ट्रोनिक मीडिया' कहते हैं। रेडियो अर्थात आकाशवाणी के समाचारों के अलावा उसके द्वारा प्रसारित होने वाले विविध प्रकार के कार्यक्रम इसके अन्तर्गत आते हैं। यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि जहाँ मुद्रित माध्यम साक्षर और पढ़े लिखे लोगों का माध्यम है, वहीं रेडियो निरक्षर एवं कम-पढ़े लिखे लोगों का भी माध्यम है।

3. **दृश्य माध्यम** — इसे भी 'इलेक्ट्रोनिक मीडिया' कहते हैं। दूरदर्शन या 'टेलीविजन' इसका उदाहरण है। टेलीविजन के विभिन्न चैनलों से प्रसारित होने वाले समाचार और अन्य कार्यक्रम इसके अन्तर्गत आते हैं। दूरदर्शन श्रव्य-दृश्य माध्यम का सशक्त उदाहरण है।

4. <u>सोसल मीडिया</u> : 'वाट्सएप्प'(Whatapp), 'फेसबुक'(Facebook) 'इंस्टाग्राम' (Instagram), 'आइमो' (Imo) आदि इसके उदाहरण हैं। 'वाट्सएप्प' का व्यवहार बातचीत और संदेश दोनों में होता है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, आइमो आदि का व्यवहार चित्रों और संदेशों के आदान-प्रदान में होता है।

5. <u>वीडियो पत्रकारिता</u> : यह पत्रकारिता का नया आयाम है। इसे भी अधिकतर लोग 'सोसल मीडिया' के अन्तर्गत ही रखते हैं, लेकिन 'वीडियो पत्रकारिता' करने वाले पत्रकार इसे 'डीजिटल प्लेटफॉर्म' के रूप में संबोधित करते हैं। जैसे- 'सत्य हिन्दी', 'धाकड़ खबर', 'ललनटॉप', 'नेशनल दस्तक', 'नेशनल जनमत', 'टू... मीडिया', 'दस्तक इंडिया', 'न्यूज़क्लिक', 'न्यूज़24 नेशनल', 'डब्ल्यू न्यूज़ नेटवर्क', 'द वायर', 'दलाइव टीवी' इत्यादि

मुख्यधारा की मीडिया या पत्रकारिता और सोसल मीडिया या वीडियो पत्रकारिता में बहुत अंतर है। ज़मीन-आसमान का फर्क है। जहाँ मुख्यधारा की पत्रकारिता का फलक बहुत व्यापक है, वहाँ सोसल मीडिया या वीडियो पत्रकारिता का दायरा सीमित है और इसकी अपनी सीमाएँ हैं। इसमें संदेह नहीं है कि सूचना पाने का त्वरित और विश्वसनीय माध्यम इलेक्ट्रोनिक मीडिया ही है। यह तो आज का सबसे लोकप्रिय माध्यम बन चुका है और पत्रकारिता की दुनियाँ में इससे क्रांतिकारी परिवर्तन आ गया है। आवश्यकता इसके सही ढंग से उपयोग की है।

(ख) <u>विचारधारा के आधार पर पत्रकारिता के भेद</u> :-

1. <u>दलित पत्रकारिता</u> — विचारधारा के आधार पर सबसे प्रखर दलित पत्रकारिता है। इस पर डॉ० भीमराव अम्बेडकर का प्रभाव है। किसी सीमा तक 'दलित पत्रकारिता' 'अम्बेडकर पत्रकारिता' का ही पर्याय है।

Scanned with CamScanner

2. 'सर्वोदयी पत्रकारिता' – इसी तरह गांधीवादी विचारधारा से जुड़ी पत्रकारिता भी है। पंडित भवानी प्रसाद मिश्र सरीखे कुछ विचारक इसे आचार्य विनोबा भावे का नाम जोड़ते हुए 'सर्वोदयी पत्रकारिता' कहना ठीक समझते हैं।

(ग) पत्रकारिता के प्रमुख प्रकार :

1. खोजी पत्रकारिता या अनुसंधानात्मक पत्रकारिता (Investigative Journalism) :– जिन सूचनाओं या तथ्यों को कोई जानबूझ कर छिपाना चाहे, उन्हें चुपचाप पूरे परिप्रेक्ष्य में ठोस प्रमाणों के साथ उद्घाटित कर प्रकाश में लाना खोजी पत्रकारिता के अन्तर्गत आता है। अनुद्घाटित सूचनाओं को सत्य अथवा प्रमाणों द्वारा उद्घाटित करना स्वस्थ खोजी पत्रकारिता का लक्ष्य होना चाहिए। काल्पनिक प्रसंगों, अप्रमाणिक तथ्यों, अफवाहों को लेकर तैयार की गई सनसनीखेज सामग्री खोजी पत्रकारिता के लिए घातक है। चाहे कितनी ही बड़ी घटना हो, घोटाला हो, कोई काण्ड हो, खोजी पत्रकार को उसकी तह तक, पृष्ठभूमि तक जाना चाहिए। उसकी तह में छिपे रहस्यों को, सारे तथ्यों को खोजकर तार्किक ढंग से उनका संयोजन कर सावधानीपूर्वक उनका संपादन-प्रकाशन करना चाहिए। यही उसका प्रथम कर्तव्य है।

2. व्याख्यात्मक पत्रकारिता (Interpetative Journalism) :– आधुनिक पत्रकारिता जहाँ व्यापक हुई है, वहीं उसकी माँग समाचारों की व्याख्या की भी हो चली है। हमारा समय और समाज तेजी से बदल रहा है। समाज में जटिलता बढ़ती चली जा रही है। कई घटनाएँ बाहर से हमें सीधी और सपाट लग सकती हैं, लेकिन उनके मूल में क्या है? कौन-सी

घटनाएँ सक्रिय हैं? उन घटनाओं के सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक परिणाम क्या हो सकते हैं? इत्यादि तथ्यों और पक्षों पर लिखकर तार्किक परिणति को सामने लाना व्याख्यात्मक पत्रकारिता का क्षेत्र है। ऐसी पत्रकारिता समाचारों के यथार्थ से हमारा परिचय कराती है और हमें जागरूक करती है। इस तरह की पत्रकारिता में समाचार-एजेंसियों का बहुत बड़ा योगदान है। ये एजेंसियाँ समाचार एकत्र कर महत्वपूर्ण समाचारों का विश्लेषण-विवेचन करती हैं, उनकी पृष्ठभूमि तथा उनके भावी परिणामों की ओर संकेत करते हुए विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं और समाचार माध्यमों को उपलब्ध कराती हैं।

3. खेल पत्रकारिता (sports Journalism) :-

आज हर आयु की महिलाओं और पुरुषों के अलावा बच्चों में खेलों के प्रति रुचि और लगाव है। समाचार पत्रों में खेल समाचार देने की प्रथा पुरानी नहीं है। सन् 1951 में जब नई दिल्ली में एशियाई खेल आयोजित किए गए, तब से कुछ समाचार पत्रों में खेल समाचार प्रकाशित होने शुरू हुए। लेकिन पूर्णरूप से इसकी शुरुआत सन् 1980 के आसपास ही मानी जाती है। आज सभी समाचार पत्रों में चाहे वे दैनिक हों, साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक, खेल समाचार रहते ही हैं। खेल चाहे इंडोर हों या आउटडोर, सभी के समाचार आते रहते हैं।

4. ग्रामीण पत्रकारिता और कृषि पत्रकारिता :

हमारा देश गाँवों का देश है। अत्यंत विकास के बावजूद गाँव में अभी भी पिछड़ापन है। गाँवों में नई चेतना और विज्ञान के विकास के स्वरों को समाचार पत्रों के द्वारा ही पहुँचाया जा सकता है। सुप्रतिष्ठित पत्रकार और 'प्रताप' के संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी का कहना है कि शब्द महलों में नहीं रहता।

भारत की अधिकांश आबादी है, जो गाँव और कस्बों में निवास करती है। जो पत्रकार नियमित रूप से ग्रामीण समाज की समस्याओं, आवश्यकता के अनुसार समाचारपत्र, पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन आदि जन संचार माध्यमों में अपना योगदान करते हैं, उन्हें ग्रामीण पत्रकार या ग्रामीण पत्रकार (Rural Journalist) कहते हैं। तथा जो ग्रामीण की आवश्यकताओं के अनुरूप न होकर केवल कृषकों के हितों तथा लाभों तक सीमित होता है, उसे हम कृषि पत्रकार (Agricultural Journalist) कह सकते हैं।

कृषि पत्रकारिता में कृषि रसायन, कृषि अर्थशास्त्र, कीटनाशक औषधि, कृषि प्रसार, पशु-पालन आदि का अध्ययन शामिल है। पहला कृषि पत्र 'कृषि सुधार' 1914 में, उसके बाद 1918 में आगरा से 'कृषि' पत्र प्रारंभ हुआ। सरकार ने कृषि को और ध्यान देना शुरू किया तो 1948 में 'खेती', 1950 में 'कुरुक्षेत्र' का प्रकाशन शुरू हुआ। 1950 के बाद कई कृषि पत्रिकाएं प्रकाश में आईं; इनमें 'सहकारी', 'कृषक समाचार' उल्लेखनीय हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् भी कई पत्र निकालती है।

5. विकास पत्रकारिता : पहले लोगों की यह धारणा थी कि पत्रकारिता का संबंध केवल राजनीति से ही है। लेकिन अब यह भ्रम दूर हो गया है कि नई पत्रकारिता सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, प्राविधिकी संबंधी समग्र विकास के पहलुओं पर प्रकाश डालने वाली विकास पत्रकारिता है। विकास पत्रकारिता विकास पर केंद्रित होती है। चाहे वह विकास उद्योग, औषधि, विज्ञान अथवा अन्य किसी भी क्षेत्र में हो। भारतीय सरकार अपने विकास कार्यक्रमों को जनता तक पहुंचाने के लिए पत्र भी निकालती है। 'योजना' भारत सरकार की एक ऐसी ही पत्रिका है।

6. आर्थिक पत्रकारिता : भारत में आर्थिक पत्रकारिता की शुरुआत वर्ष 1961 ई० में हुई। अर्थ से संबंधित कार्यकलापों को उजागर करने के लिए आर्थिक पत्रकारिता

काफी विकसित हो गई है। मुद्रा बाज़ार, पूँजी बाज़ार, वस्त्र बाज़ार, पंचवर्षीय योजना, ग्रामोद्योग, श्रम कानून और राष्ट्रीय आय के समाचार आज पाठकों को अधिक आकर्षक प्रतीत होते हैं। 'इकोनॉमिक टाइम्स', 'व्यापार भारती', 'फाइनेंशियल एक्सप्रेस', 'व्यापार केसरी' जैसे पत्रों द्वारा उद्योग और वाणिज्य व्यवसाय की जानकारी दी जा रही है।

इसके अलावा वाणिज्यिक-पत्रकारिता, साहित्यिक-पत्रकारिता, फोटो-पत्रकारिता, फिल्म-पत्रकारिता, रेडियो-पत्रकारिता, दूरदर्शन-पत्रकारिता, स्वास्थ्य-पत्रकारिता, विज्ञान-पत्रकारिता, संसदीय-पत्रकारिता, संदर्भ-पत्रकारिता इत्यादि पत्रकारिता के कई महत्वपूर्ण प्रकार हैं।

—x—

डॉ० सफीउल्लाह अंसारी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग, करीम सिटी कॉलेज
जमशेदपुर, झारखण्ड-831001

Scanned with CamScanner